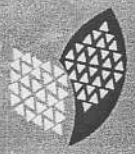

MESMAC International Conferences
MES Mampad College (Autonomous)
www.mesmac.in

Collection of selected papers presented in MESMAC International Conference 3

जनसंस्कृति का अनान्तिम प्रतिरोध और समकालीन साहित्य

People FIRST?

MAN MACHINE MILIEU

15 16 17 January 2019

MESMAC
INTERNATIONAL
CONFERENCES
www.mesmac.in

PEOPLE FIRST?
MAN · MACHINE · MILIEU
2019 January 15 | 16 | 17

जनसंस्कृति का अनान्तिम प्रतिरोध और समकालीन साहित्य

Anthology of Research Papers

Chief Editor
Dr.PK Babu

Associate Editor
Dr. Sreeja P.V

Publication Division:

Dr. Ghafoor Memorial (ESTD 1965)
M.E.S. MAMPAD COLLEGE
(AUTONOMOUS) Accredited by NAAC with A grade

Mampad College P.O. 676542, Malappuram Dt., Kerala
E-mail: info@mesmampad.org

ISBN : 978-93-5321-964-2

8.

''अनुभूति के घेरे'' में अभिव्यक्त नारी संवेदना (विशेष संन्दर्भ- त्रिशूल, कैसे कहूँ, सही निर्णय)

डा .प्रीता.
आसिस्टेंट प्रोफसर,
हिन्दी विभाग, के.वी.एम कॉलेज वलांजेरी

दलित साहित्य, दलित समाज की वास्तविक पहचान करानेवाला साहित्य है। सामाजिक विभेद, वर्ण-व्यवस्था, ब्राह्मणवादी नैतिकता, सामाजिक-संरचनात्मक अन्याय, अत्याचार और शोषण के विरुद्ध अपनी अस्मिता को सजग रखने को लक्ष्य करके दलित साहित्य का सृजन हुआ। अतः दलित साहित्य में प्रतिरोध और प्रतिशोध का स्वर मुखरित है। समकालीन हिन्दी साहित्य में दलित साहित्य की प्रायः सभी विधाओं में दलित विमर्श चर्चा का विषय बन गया है। उसमें कहानी भी एक विधा है।

दलित कहानी केवल दलित जीवन की त्रासदी को ही अभिव्यक्त नहीं करती, बल्कि अन्य समाजों के साथ उसके संबंध, भेदभाव और जड़ मानसिकता को भी व्यक्त करती है। दलित साहित्य की प्रमुख लेखिका है सुशीला टाकभौरे। कहानिकार कवयित्री, नाटककार आदि के रूप में सुशीला जी प्रसिद्ध है। 'स्वाति बूंद और खोरे मौती', यह तुम भी जानो, तुमने उसे कब पहचाना, हमारे हिस्से का सूरज (काव्य संग्रह), नंगा सत्य (नाटक), रंग और व्यग्य (नाटक संग्रह), नीला आकाश, तुम्हें बदलना ही होगा (उपन्यास), शिंकजे का दर्द (आत्मकथा), परिवर्तन ज़रूरी है (लेख संग्रह), हिन्दी साहित्य के इतिहास में नारी, भारतीय नारीः समाज और साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ में (विवरण), टूटता वहम, अनुभूति के घेरे, संघर्ष (कहानी संग्रह) आदि उनकी प्रकाशित रचनाएँ है।

सुशीला टाकभौरे का कहानी संग्रह 'अनुभूति के घेरे' १९९७ में प्रकाशित हुआ। इसमें तेरह कहानियाँ हैं। सभी कहानियाँ दलित समाज और नारी जीवन की स्थितियों के आधार पर लिखी गई है। जहाँ नारी मनुवादी मान्यता के आधार पर क्षमा, त्याग, करुणा, ममता, दया, परोपकार आदि सद्भावों से परिपूर्ण आदर्श रूप है, वहाँ उनके पास अधिकार नहीं, केवल कर्तव्य ही कर्तव्य है। जिन्हें पूरा करते-करते वह इतनी थक जाती है कि जीवन की आखिरी घड़ी तक वह अपने विषय में कुछ सोच नहीं पाती। नारी कितनी भी शिक्षित हो